SEMESTER - 3

CC- 13

National Movement in India

- Unit -1 : Beginning of Indian nationalism

  Part -3

Vetted by :

प्रो० (डॉ०) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 09835463960

Presented by:

शिप्रा नंदन

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 08604171178

nandan.shiprabhu@gmail.com

भारतीय राष्ट्रवाद का शुभारम्भ

५) आधुनिक शिक्षा का प्रचलन : अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली ने आधुनिक पाश्चात्य विचारों को अपनाने में सहायता की। शिक्षा का प्रसार यद्दपि प्रशासनिक आवश्यकताओं के लिए किया गया था परन्तु इससे भारत के नव शिक्षित वर्ग को पाश्चात्य उदारवादी विचारकों को जानने में सहायता मिली। मिल्टन,बेंथम,मिल,शैली,स्पेंसर,रूसो,वाल्तेयर आदि ने भारतीय बुद्धिजीवियों में स्वतंत्रता,राष्ट्रीयता तथा स्वशासन की भावनाएं जगा दी जिससे उनके अंदर ब्रिटिश शासन के अंदर रोष उतपन्न होने लगा। नए बुद्धिजीवी वर्ग प्रायः डॉक्टर,वकील,अध्यापक,प्रशासक आदि थे और उनमे से कई ने इंग्लैंड जाकर पढाई की थी। इंग्लैंड में उन्होंने राजनीतिक संस्थाओं का प्रचलन भी देखा था और वह के नागरिकों के मूल अधिकारों से भी अवगत हुए किन्तु समान सरकार की भारत में नीतियों ने उन्हें असमानता का भाव दर्शाया। १८३३ का चार्टर एक्ट और १८५८ की विक्टोरिया घोषणा पत्र के वावजूद ऊँचे-नीचे पदों पर भारतीयों को नहीं रखा जाता था। इस तथ्य से भारतीयों में असंतोष बढ़ा और यह दिन प्रतिदिन और अधिक संक्रामक होता गया। सुरेंद्र नाथ बनर्जी,मनमोहन घोष,अरविन्द घोष जैसे लोग आंदोलन की तरफ इसलिए आये क्योकि उनके साथ ऊँचे पदों के सम्बन्ध में भेदभाव किया जाता था। ये विद्वतापूर्ण लोग,नवोदित राजनीतिक असंतोष का केंद्र बिंदु बने और समाज का यही वर्ग था जिसने भारतीय राजनीतिक संस्थाओं को नेतृत्व प्रदान किया।

भारत में अंग्रेजी भाषा के प्रसार व लोकप्रियता के कारण शिक्षित भारतीयों को एक संपर्क भाषा मिल गई थी,जिसने भाषागत भिन्नता के बावजूद सबको एक ही मंच पर लेकर खड़ा कर

दिया था,जिसने कही न कही आंदोलन को तीव्र करने व राष्ट्रवाद के प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

६) समाचार-पत्रों का विकास : भारत में मुद्रणालय की स्थापना यूरोपियों के द्वारा हुई थी,जिसके बाद ही समाचार-पत्र और सस्ते साहित्य का प्रकाशन आरंभ हो गया। पाश्चत्य साहित्य व समाचार-पत्रों के साथ-साथ हिंदी समाचार पत्रों व साहित्यों का प्रकाशन आरम्भ हो गया। यद्दपि इनपर बहुत से साम्राज्यवादी शासकों ने प्रतिबन्ध लगाए परन्तु १८७७ तक भारतीय भाषा वाले समाचार पत्रों की संख्या १६९ तक पहुंच गई थी। इन पत्रों ने जनमानस को बौद्धिक स्तर पर जागरूक करने का कार्य ही किया। डी हिन्दू पैट्रियट,डी अमृत बाजार पत्रिका,डी बॉम्बे क्रॉनिकल,डी केसरी,डी इन्दु प्रकाश,डी हिन्दू आदि ऐसे अनेक समाचार पत्र थे जिन्होंने अंग्रेजी शासकों के अत्याचार को प्रकाशित किया जिससे जनमानस शिक्षित होने के साथ ही शासन के अत्याचारों के प्रति जागरूक भी हुई। इस तरह से समाचार पत्रों का विकास राष्ट्रवाद के प्रसार में एक अहम् तत्व साबित हुआ।

७) मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवियों का उत्थान : अंग्रेजों के प्रशासनिक और आर्थिक क्षेत्र की नवीन प्रक्रिया से नगरों में एक नवीन मध्यमवर्गीय नागरिकों की श्रेणी उत्पन्न हुई। यह नवीन वर्ग अपनी शिक्षा,समाज में उच्च स्थान प्राप्त कर प्रशासक वर्ग के समीप आई। इसके साथ ही यह वर्ग भारतीय जनता के भी करीब

आई और इन्होने कई संगठनो का निर्माण कर भारतीयों को एकजुट कर राष्ट्रवाद के जरिए आंदोलन को तीव्रता प्रदान करने का कार्य किया।

८) गौरवशाली अतीत की व्याख्या : साम्राज्यवादी लेखकों के विपरीत अंग्रेजी सरकार के कुछ अधिकारियों ने प्राचीन भारतीय इतिहास पर शोध करके भारत की समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा को जाना। कनिंघम जैसे पुरातत्वविदों की खुदाइयों ने भारत की म्हणता का वह चित्र प्रस्तुत किया जो रोम और यूनान की प्राचीन परम्परों के समकक्ष था। बहुत से यूरोपियों विद्वानों ने यह तक लिखा कि भारतीय आर्य और यूरोपियन जातियां एक ही शाखा से उपजी हैं,इस तरह का व्यक्तव्य सुनकर शिक्षित भारतीयों लके आत्मसम्मान में वृद्धि हुई। इसके अलावा भारतीय विद्वानों ने वेद,उपनिषद में वर्णित भारत कि गौरवशाली अतीत की व्याख्या की,जिसके फलस्वरूप भारतीय जनता में मातृभूमि के प्रति प्रेम का संचार हुआ जिसने राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित करने का कार्य किया।

९) समकालीन यूरोपीय आंदोलनों का प्रभाव : विदेशी शासन सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि अन्य राष्ट्रों में भी था। इसके अलावा कई राष्ट्र तो अपनी पुरानी भ्रष्ट परम्पराओं को परिवर्तित करना चाहते थे। यूरोप में यूनान और इटली के राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम ने साधारणतः तथा आयरलैंड के स्वतंत्रता संग्राम ने विशेषतः भारतीयों के मनोभावों को अधिक प्रभावित किया। सुरेंद्र नाथ बनर्जी तथा लाला लाजपत राय ने मैजिनी,गैरीबाल्डी और कार्बोनरी आंदोलन पर व्याख्यान दिए और लेख लिखे। इसके अल्वा आगे चलकर

रूस की क्रांति का भी भारतीय जनमानस पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा और इससे भारतीय राष्ट्रवाद भी अछूता नहीं रहा।

१०) सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलनों का प्रभाव : अठारहवीं-उन्नीसवीं शताब्दी के शिक्षित भारतीयों ने भारत की कुप्रथाओं,अंधविश्वासों का पुनः परीक्षण करके इन्हे समाप्त करना शुरू कर दिया। इसके फलस्वरूप ब्रह्मो समाज,आर्य समाज,प्रार्थना समाज,थियोसोफिकल सोसाइटी,रामकृष्ण मिशन आदि अस्तित्व में आये जिन्होंने तत्कालीन सामाजिक-धार्मिक सुधार कार्य आरंभ कर दिया। इन हिन्दू संस्थाओं के अलावा कई मुस्लिम,सिख,पारसी धर्म में भी सुधारवादी संस्थाएं बनी। धार्मिक क्षेत्र में इन सुधार आंदोलनों ने अन्धविश्वास,मूर्तिपूजा,बहुदेववाद तथा वंशानुगत पुरोहित पद्धत्ति को चुनौती दी। इसके अतिरिक्त सामाजिक कुप्रथाओं के नाम पर महिलाओं के साथ जो दुर्व्यवहार चल रहा था जैसे कि सती प्रथा,बाल विवाह,विधवाओं की स्थिति,वैश्यावृति,देवदासी प्रथा आदि जिनको समाप्त करके महिलाओं की स्थिति संतोषजनक करने का भी प्रयास किया गया। ये सभी आंदोलन उन्नतशील थे और चाहते थे कि समाज का गठन प्रजातंत्र,सामाजिक तथा व्यक्तिगत समानता,तर्क,बुद्धिवाद तथा उदारवाद आदि आधारों पर ,किया जाए। चूकिं ये सुधार संस्थाएं प्रमुख रूप से भारत की समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं से ही प्रेरणा लेती थीं,जिसका असर अखिल भारतीय राष्ट्रवाद के रूप में सामने आया।

११) जातिगत/नस्लगत भेदभाव : १८५७ की क्रांति के बाद जातिवाद,धर्मवाद और नस्लवाद अपने उग्र रूप में आ गया। जातिवाद तो पहले से ही समाज में विद्यमान था ही आगे इसमें और अधिक कट्टरता आ गई। हिन्दू-मुस्लिम में धार्मिक विभेद अंग्रेजों ने करना शुरू कर दिया तथा भारतीयों को वे बर्बर,असभ्य व निकृष्ट जाति का मानने लगे और नौकरशाही व अन्य जगह भेदभाव बड़े स्तर पर होने लगा। इस संकीर्ण दृष्टिकोण के फलस्वरूप भारतीय जनमानस के मन में प्रतिक्रिया हुई जिससे भारतीय जनमानस ने प्रतिरक्षात्मक तरीके अपनाने शुरू कर दिया।

१२) अंग्रेजों द्वारा आर्थिक शोषण : अंग्रेजी सरकार अपने आगमन के साथ ही मुनाफे के लिए हर तरीके का हथकंडा अपनाने लगी। विदेशी कंपनी ने पहले तो भारत में अपना शासन सुदृढ़ किया और उसके बाद जो भी कार्य किया या नीतियां बनाई उससे भारत की स्थिति विपन्न ही होते गई। उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्ध में इंग्लैंड औद्योगिक क्रांति का नेता था और उसे सस्ते माल और तैयार माल के लिए एक मंडी की आवश्यकता थी जिसके लिए उन्होंने भारत को चुना और सभी आर्थिक नीतियां जैसे कि कृषि,भारी उद्योग,वित्त,शुल्क,विदेशी पूंजी,निवेशन,विदेशी व्यापार,बैंक,व्यवसाय आदि सभी औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था के फायदे के लिए बनाई गई थी। चाहे सूती कपड़ों पर आयत शुल्क का मामला हो या गृह व्यय का,सभी मामलों में ब्रिटिश सरकार ने अपने हितार्थ ही नीतियां बनाईं। भारत में उन्नीसवीं सदी में बहुत अकाल पड़े और वैसी स्थिति में भारत से अनाज का निर्यात किया जा रहा था। अंग्रेजों की इन

नीतियों के खिलाफ दादा भाई नौरोजी,रमेश चंद्र दत्त,रानाडे आदि ने कई लेख लिखे और दरिद्रता और विदेशी व्यापार को जोड़कर `स्वदेशी` के जरिए राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित किया गया।

१३) लार्ड लिट्टन की प्रतिक्रियावादी नीतियां : अंग्रेज अधिकारियों ने कई अत्याचारी कानून बनाए। उन अधिकारियों में लिटन की नीतियां अत्यधिक क्रूर थीं। भारतीय नवयुवकों को आई सी एस परीक्षा से बाहर करने के लिए इस परीक्षा में भर्ती होने की आयु घटाकर २१ वर्ष से १९ वर्ष कर दी गई। १८७७ में भीषण अकाल के समय दिल्ली में एक भव्य दरबार आयोजित कर लाखों रुपयों को नष्ट करने से भारतीयों में सरकार के खिलाफ काफी रोष था। इसके अतिरिक्त भारतीय भाषा,समाचार पत्र अधिनियम तथा भारतीय शास्त्र अधिनियम पारित कर भारतीयों पर प्रतिबन्ध लगाया गया। लिटन के इस तरह के कार्यों की वजह से भारत में जातीय कटुता बढ़ती ही गई जिसके फलस्वरूप भारत में अनेक राजनीतिक संस्थाएं बनीं जिसने सरकार विरोधी आंदोलन चलाया और राष्ट्रवाद के प्रसार में अपनी भूमिका निभाई।

१४) इल्बर्ट बिल का विवाद : इल्बर्ट बिल ने जनपद सेवा के भारतीय जिला तथा सत्र न्यायाधीशों को वही शक्तियां तथा अधिकार देने का प्रयत्न किया जो उनके यूरोपियन साथियों को मिला हुआ था। यह कार्य रिपन के कार्यकाल में किया गया था। रिपन भारतीयों में ज्यादा सम्माननीय वायसराय था। इस बिल से यूरोपीय लोगों ने इसे अपना अपमान समझा और इतनी कड़ी आलोचना की कि अंततः इस अधिनियम

को बदलना पड़ा। इस घटना के पश्चात् भारतीयों ने ब्रिटिश सरकार के भेदभाव को समझा और यूरोपीय अन्याय के खिलाफ एकजुट होने लग।,जिससे निश्चित रूप से राष्ट्रवाद का प्रसार हुआ।

अंततः कहा जा सकता है कि भारतीय राष्ट्रवाद के उदय में कई तत्त्व विद्यमान थे ,जिसने समय-समय पर राष्ट्रवाद की लहर को हवा देने का ही कार्य किया। अंग्रेजी कंपनी सिर्फ अपने व्यापारिक मुनाफे के लिए ही आई थी परन्तु धीरे-धीरे उसने प्रशासन पर भी अपनी पकड़ मजबूत करते हुए पुरे भारत पर ही शासन करने लगी और इस शासन में उसने भारत का इतना अधिक आर्थिक शोषण किया जिसके कारण भारत सोने की चिड़िया से एक निर्धन राष्ट्र बन गया। अंग्रेजों की सारी नीतियां ही दमनकारी थी फिर चाहे उन्हें अंग्रेजों ने कितना भी विकसित कहा हो। इन्ही नीतियों ने भारतीयों के मन में विदेशी शासन के प्रति घृणा और भारत के प्रति स्वदेश प्रेम की भावना जागृत की जो निरंतर बढ़ता ही रहा और इसी राष्ट्रवाद की लहर में अंततः अंग्रेजों को १९४७ में भारत छोड़कर जाना पड़ा।